License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

1 तीमुथियुस 1:1–11

पौलुस के पास अधिकार था क्योंकि परमेश्वर ने उसे प्रेरित बनने का आदेश दिया था। इस अधिकार का उपयोग करते हुए, पौलुस ने तीमुथियुस को इफिसुस में रहने और वहां कार्य करते रहने का आदेश दिया। तीमुथियुस के कार्य का एक हिस्सा लोगों को झूठी शिक्षा सिखाने से रोकने का आदेश देना था। आदेशों का उद्देश्य प्रेम था। पौलुस ने तीमुथियुस को यह आदेश इसलिए दिया क्योंकि वह तीमुथियुस और इफिसुस की कलीसिया से प्रेम करता था। तीमुथियुस झूठी शिक्षाओं को सुधारकर इफिसुस में कलीसिया के प्रति अपना प्रेम दिखाएगा। जब लोग यीशु के बारे में सच्ची शिक्षा पर विश्वास करते हैं, तो उनके बीच परमेश्वर का प्रेम मजबूत होता है। इफिसुस में कुछ विश्वासियों ने धार्मिक कहानियाँ और विचार सिखाए जो यीशु के बारे में नहीं थे। उन्होंने यहूदियों की व्यवस्था के बारे में भी बिना समझे सिखाया। पौलुस ने समझाया कि मूसा की व्यवस्था ने लोगों को दर्शाया कि क्या उन्हें नहीं करना चाहिए। लेकिन व्यवस्था लोगों से वह नहीं करा सका जो उन्हें करना चाहिए। परमेश्वर लोगों को वह करने में सक्षम बनाता है जो उन्हें करना चाहिए। पवित्र आत्मा उन लोगों के हृदयों में काम करता है जिनके पास परमेश्वर में विश्वास है। वह उन्हें यह जानने में मदद करता है कि क्या निष्कपट, सही और सत्य है।

1 तीमुथियुस 1:12–20

पौलुस ने खुद को इस बात का उदाहरण बताया कि कैसे परमेश्वर किसी व्यक्ति के जीवन में कार्य करते हैं। वर्षों पहले, पौलुस ने यीशु के बारे में सुसमाचार का हिंसक और बुरे तरीकों से विरोध किया था। परमेश्वर ने उस पर दया की। पौलुस ने पहचाना कि वह एक पापी था और उसे उद्धार के लिए प्रभु यीशु की आवश्यकता थी। यीशु का अनुग्रह और प्रेम ने उसे पूरी तरह बदल दिया। फिर परमेश्वर ने पौलुस को दूसरों को यीशु के बारे में बताने का कार्य सौंपा। पौलुस की यह कहानी प्रेरितों के काम अध्याय 9 में बताई गई है। जब पौलुस ने इसके बारे में तीमुथियुस को लिखा, तो वह धन्यवाद से भरा हुआ था। उसने परमेश्वर की सहनशीलता और दया के लिए स्तुति की। पौलुस का उदाहरण दिखाता है कि जो लोग यीशु के खिलाफ बोलते हैं, वे बदल सकते हैं। वे विश्वास से भर सकते हैं और परमेश्वर का कार्य कर सकते हैं। पौलुस ने दो विश्वासियों का उल्लेख किया जिन्होंने परमेश्वर के खिलाफ बुरी बातें कही थीं। पौलुस ने कहा कि उसने उन्हें शैतान के हवाले कर दिया था। शैतान, दानव का एक और नाम है। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 5:1–13 में भी लोगों को शैतान के हवाले करने के बारे में लिखा। इसका मतलब था कि कुछ समय के लिए वे कलीसिया समुदाय का हिस्सा नहीं बन सकते थे। अगर वे वापस आना चाहते थे तो उन्हें अपने पाप से मुड़ना और पश्चाताप करना पड़ता था। उन्हें परमेश्वर के बारे में सच्चाई को स्वीकार करना था।

1 तीमुथियुस 2:1–7

पौलुस ने स्पष्ट किया कि परमेश्वर सभी को बचाना चाहते हैं। इसलिए तीमुथियुस और विश्वासियों को सभी लोगों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। उन्हें सभी शासकों के लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए। शासक अपने देशों में शांति और व्यवस्था ला सकते हैं। यह विश्वासियों के लिए सहायक है क्योंकि वे यीशु का अनुसरण करते हैं और सुसमाचार फैलाते हैं। यीशु के बारे में सच्चाई का प्रचार करना पौलुस का लक्ष्य था। यीशु एक ही समय में मानव और परमेश्वर दोनों हैं। यीशु, परमेश्वर और मनुष्यों को फिर से एक साथ लाते है। यीशु के मध्यस्थ होने का यही अर्थ है। परमेश्वर के बारे में सच्चाई पौलुस के समय में इफिसुस के लोगों के विश्वास से अलग है। इफिसुस के ज़्यादातर लोग देवी अरतिमिस की आराधना करते थे और रोमी शासक कैसर की भी आराधना करते थे। लेकिन पौलुस ने कहा कि केवल एक ही परमेश्वर है। पृथ्वी पर कोई भी शासक परमेश्वर नहीं है और केवल परमेश्वर ही लोगों को बचा सकते हैं।

1 तीमुथियुस 2:8–15

यहूदी महिलाएं आमतौर पर आराधनालयों में हो रहे सभाओं के दौरान नहीं बोला करती थीं। विश्वासियों की आराधना सभाओं में यह अलग था। यीशु के अनुयायिओं के समुदाय में, पुरुष और महिलाएं दोनों बोलते और भविष्यवाणी करते थे। पुरुष और महिलाएं दोनों महत्वपूर्ण कलीसिया के अगुवे थे और सेवकों के रूप में सेवा करते थे। फिर भी इफिसुस शहर में जो महिलाएं विश्वास नहीं करती थीं, वे अरतिमिस की आराधना का नेतृत्व करती थीं। अरतिमिस एक झूठी देवी थी। इससे पौलुस चिंतित थे। इसलिए उन्होंने तीमुथियुस को इफिसुस में पुरुषों और महिलाओं को आराधना सभाओं के दौरान कैसे व्यवहार करना चाहिए, इसके बारे में निर्देश दिया। प्रार्थना एक पवित्र कार्य है। इसे लोगों के बीच बहस के तरीके के रूप में उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। लोगों के शरीर भी पवित्र हैं। वस्त्रों का उपयोग दिखावा करने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। यीशु का अनुसरण करते हुए लोगों के द्वारा किए गए अच्छे कार्य ही वह चीज होनी चाहिए जो दूसरों को दिखाई दे। पौलुस ने सभी लोगों को अध्ययन और सीखने के लिए प्रोत्साहित किया। इससे उन्हें परमेश्वर के बारे में किसी भी प्रकार के झूठ से धोखा नहीं खाने में मदद मिलेगी। परमेश्वर ही एकमात्र उद्धारकर्ता हैं और केवल वही

आराधना के योग्य हैं। लोग यीशु में विश्वास करके और उसका अनुसरण करके बचाए जाते हैं।

1 तीमुथियुस 3:1–16

पौलुस ने एफिसुस में विभिन्न प्रकार के कलीसिया के अगुवों का वर्णन किया। कुछ ने सेवकों का काम किया। सभी अगुवों को यह उदाहरण स्थापित करना था कि कैसे सोचना, बोलना और कार्य करना चाहिए। पौलुस ने दस चीजें जो उन्हें करनी चाहिए और पांच चीजें जो उन्हें नहीं करनी चाहिए सूचीबद्ध कीं। यह सूची तीतुस 1:1–9 में कलीसिया के अगुवों के बारे में पौलुस द्वारा लिखी गई सूची के समान है। उनका मन इस सत्य पर केन्द्रित होना चाहिए कि यीशु कौन है। उनके शब्द निष्कपट, सच्चे और दूसरों के लिए सहायक होने चाहिए। उनके कार्यों का सम्मान विश्वासियों और अविश्वासियों द्वारा किया जाना चाहिए। यदि वे विवाहित हैं तो उन्हें विवाह में विश्वासयोग्य होना चाहिए। यदि उनके बच्चे हैं तो उन्हें समझदार माता-पिता होना चाहिए। उन्हें अपने विश्वास में निरंतर मजबूत होते रहना चाहिए। उन्हें धन के बारे में ईमानदार होना चाहिए और लोगों को धोखा नहीं देना चाहिए। उन्हें स्वयं पर नियंत्रण रखना चाहिए। उन्हें बहुत अधिक शराब नहीं पीनी चाहिए। उन्हें अपनी संपत्ति का अच्छी तरह से प्रबंधन करना चाहिए। उन्हें लोगों की सेवा और नेतृत्व करते समय कोमल और विनम्र होना चाहिए। पौलुस ने तीमुथियुस को समझाया कि उन्होंने कलीसिया के अगुवों के बारे में ये निर्देश क्यों लिखे। वह चाहते थे कि विश्वासियों को पता चले कि उन्हें कैसे कार्य करना चाहिए। अगुवों को अपने जीवन जीने के तरीके से यह सिखाना चाहिए। कलीसिया परमेश्वर का परिवार है। यह सभी को दिखाता है कि परमेश्वर मानव जाति से कैसे जीने की अपेक्षा करते है। कलीसिया सभी को मसीह का रहस्य दिखाता है। यह रहस्य यह है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं।

1 तीमुथियुस 4:1–16

पौलुस ने तीमुथियुस को निर्देश दिए कि कैसे एक कलीसिया के अगुवे के रूप में यीशु की अच्छी तरह से सेवा की जाए। तीमुथियुस को लोगों को सिखाना था कि उन्हें परमेश्वर द्वारा बनाई गई हर चीज के लिए आभारी होना चाहिए। उन्हें पवित्र होने के लिए विवाह या कुछ खाद्य पदार्थों से दूर रहने की ज़रूरत नहीं थी। तीमुथियुस को अपनी आत्मिक जीवन में बढ़ने के लिए कड़ी मेहनत करनी थी। जैसे खेल में लोग अपने शरीर को स्वस्थ और मजबूत बनाने के लिए प्रशिक्षण लेते हैं, वैसे ही तिमुथियुस को अपनी आत्मा को स्वस्थ और मजबूत बनाने के लिए प्रशिक्षण देना था। यह प्रशिक्षण यीशु के बारे में सच्ची शिक्षाओं को सुनने से आता है। यह परमेश्वर के वचन को पढ़ने से आता है। यह आत्मा के वरदानों का उपयोग करने से आता है। यह हमेशा के लिए परमेश्वर के साथ रहने की आशा न छोड़ने से आता है। तीमुथियुस को दूसरों से प्रेम करना चाहिए और विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर सभी लोगों के उद्धारकर्ता हैं। तीमुथियुस का उदाहरण दूसरे विश्वासियों को सिखाएगा कि यीशु के विश्वासयोग्य अनुयायी के तौर पर कैसे जीना है।

1 तीमुथियुस 5:1–6:2

कलीसिया के अगुवे के रूप में, तीमुथियुस को अन्य विश्वासियों के साथ परिवार के सदस्यों की तरह व्यवहार करना था। वे परमेश्वर के परिवार में पिता, माता, बहनें और भाई थे। उन सभी की ज़रूरतें थीं और उन्हें एक-दूसरे की देखभाल करने में मदद करनी चाहिए थी। पौलुस ने कलीसिया में विधवाओं के बारे में बात करने का विशेष ध्यान रखा। कलीसिया के प्राचीन एक तरह के अगुवे थे। उन्हें कलीसिया की विश्वासयोग्यता से सेवा करने के लिए सम्मानित किया जाना था। जब उन्होंने पाप किया, तो इसे निष्पक्ष रूप से निपटाया जाना था। ऐसा इसलिए था क्योंकि कलीसिया को यीशु के बारे में सभी के लिए एक विश्वासयोग्य गवाह होना चाहिए। यहां तक कि जब अगुवे यीशु की विश्वासयोग्यता से सेवा करते हैं, तो लोग उन पर गलत काम करने का आरोप लगा सकते हैं। पौलुस ने एक निष्पक्ष व्यवस्था के बारे में बताया। यह प्रणाली कलीसिया के प्राचीनों की रक्षा करेगी यदि उन पर झूठा आरोप लगाया गया हो। पौलुस ने तीमुथियुस को नए अगुवों की नियुक्ति के बारे में सतर्क रहने की चेतावनी भी दी। अगुवों की नियुक्ति लोगों पर हाथ रखने से की जाती थी। इससे वे सेवा करने वाले अगुवे बन जाते थे। कलीसिया के अगुवों को पाप से दूर रहने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध होना चाहिए। पौलुस ने तीमुथियुस को याद दिलाया कि कोई भी पाप हमेशा के लिए छिपा नहीं रहता। देर-सवेर लोगों को अपने पापों के लिए न्याय का सामना करना पड़ता है।अच्छे काम जो लोग करते हैं, वे भी दूसरों द्वारा देखे और पहचाने जाएंगे। यह इस मामले में भी सच था कि दास और उनके मालिक एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते थे। यीशु का अनुसरण करने वाले दासों को अपने स्वामियों की सेवा सम्मान के साथ करनी थी। मालिकों को अपने दासों की अच्छी देखभाल करनी थी जो उनकी सेवा करते थे।

1 तीमुथियुस 6:3–21

इफिसुस में कुछ विश्वासियों को असहमति और बहस करके परेशानी पैदा करना पसंद था। अन्य लोग सोचते थे कि यीशु का अनुसरण करना धनवान बनने का तरीका है। धन से प्रेम करना और इसे और अधिक पाने की कोशिश करना उन्हें बुरे काम करने के लिए प्रेरित करता था। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि वह उन लोगों जैसा न बने। इसके बजाय, उसे प्रभु और राजा के रूप में यीशु के बारे में सच्चाई सिखाने में दृढ़ रहना चाहिए। पौलुस ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा कि यीशु का अनुसरण करने से लोग धनवान नहीं बनते। विश्वासयोग्य विश्वासी जो उनके पास है उसके लिए आभारी होना और

1 **तीमुथियुस** *6:3–21*

उससे खुश रहना सीखते हैं। तीमुथियुस को धनवान विश्वासियों को चेतावनी देनी थी कि वे अपने धन पर भरोसा न रखे। इसके बजाय उन्हें स्वतंत्र रूप से अपने धन को साझा करना चाहिए और अपना विश्वास परमेश्वर में रखना चाहिए। पौलुस ने समझाया कि यीशु का अनुसरण करने से पृथ्वी पर धन से कहीं बेहतर कुछ मिलता है। जब यीशु लौटेंगे तो उनके विश्वासयोग्य अनुयायी हमेशा के लिए उनके साथ रहेंगे। यही वह जीवन है जिसे पौलुस ने वास्तव में जीवन कहा।